



ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 12 अंक 48

कुल पृष्ठ-8

15 से 21 जून, 2017

दयानन्दाब्द 193

सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 आ. कृ.-06

स्वामी इन्द्रवेश जी का समाज निर्माण में बहुत बड़ा योगदान रहा

- मनीष ग़ोवर

आर्य युवा निर्माण अभियान का प्रारम्भ स्वामी इन्द्रवेश जी ने किया

- स्वामी आर्यवेश

आर्य राष्ट्र के प्रथम स्वप्न द्रष्टा थे स्वामी इन्द्रवेश जी

- स्वामी ओमवेश

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सम्मान समारोह एवं युवा संकल्प कार्यक्रम का किया गया भव्य आयोजन

12 जून 2017 (रोहतक) :- आर्य समाज के नेता पूर्व सांसद स्वामी इन्द्रवेश जी की 11 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, आश्रम टिटौली में आज युवा संकल्प व सम्मान समारोह का आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर समारोह में मुख्य अतिथि हरियाणा के सहकारिता मंत्री मनीष ग़ोवर रहे।

अपने उद्बोधन में मनीष ग़ोवर ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ मैंने बहुत लंबे समय तक कार्य किया है। वो समाज निर्माण के पुरोधा के रूप में कार्य करते थे। उनका समाज निर्माण में बहुत बड़ा योगदान रहा। कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, व किसान मजदूर के मुद्दों पर स्वामी जी अग्रणी नेता की भूमिका में रहते थे। उन्होंने कहा कि यह देश संतों का देश है। देश को नई दिशा देने में संतो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने संस्था में सोलर सिस्टम लगाने के लिए 10 लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की। संस्था के अधिकारियों ने मंत्री जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री स्वामी ओमवेश ने अपने विचार रखते हुये कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी आर्य राष्ट्र निर्माण के प्रथम स्वप्न द्रष्टा थे। उन्होंने ही आर्य राजनीति की नींव रखी। समाज में एक आदर्श राजनीति की पहल उन्होंने की। आज हम उनके अधूरे स्वप्नों को पूरा करने का संकल्प लेते हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार रखते हुये कहा कि वर्तमान का आर्य युवा निर्माण अभियान व बेटी बचाओ अभियान स्वामी इन्द्रवेश जी की देन है। आर्य समाज में सबसे ज्यादा संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी ने तैयार किये। आज उनके द्वारा तैयार की गई दयानंद की फौज ही आर्य समाज में सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

स्वामी इन्द्रवेश जी को विरजानंद एडवोकेट ने श्रधांजलि देते हुये कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी से पहले युवाओं को आर्य समाज से दूर रखा जाता था। इन्होंने ही पहली बार युवाओं को आर्य



युवा संन्यासी स्वामी ओमवेश जी को स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य विरक्त सम्मान से विभूषित करते हुए बायें से स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी रामवेश जी, श्री वेद प्रकाश आर्य एवं श्री दलपत सिंह आर्य

समाज में दीक्षित किया। स्वामी प्रणवानंद जी ने अपने विचार रखते हुये कहा कि आज आर्य समाज को पुनः स्वामी इन्द्रवेश जी जैसे तेजस्वी संन्यासियों की आवश्यकता है। सान्यास आश्रम गाजियाबाद के प्रधान स्वामी चंद्रवेश ने अपने विचार रखते हुये कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी एक सर्वगुण संपन्न नेता थे। आर्य समाज के सबसे तेजस्वी नेता थे। उनके समकालीन विद्वानों में भी वे अग्रणी पंक्ति में थे। आज स्वामी आर्यवेश जी उनके पद चिन्हों पर चलकर उनके अधूरे कार्यों को पूरा कर रहे हैं। आचार्य हरिदत्त ने कहा कि अपने आप को वेदों से जोड़कर रखोगे तो जीवन में सफलता अवश्य मिलेगी। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह ने अपने विचारों में कहा कि स्वामी

नेतृत्व में हुये हैं। उनका परिणाम भी सार्थक निकला। आज पुनः स्वामी इन्द्रवेश जी से प्रेरणा लेकर शराबखोरी के खिलाफ आंदोलन का बिगुल फूंकना चाहिये। वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष सोमदेव शास्त्री ने अपने विचार रखते हुये कहा कि पाखंड आज तेजी से जड़ें जमाता जा रहा है इसके विरुद्ध ऋषि दयानंद के दिखाये गये मार्ग पर चलकर विजय प्राप्त कर सकते हैं। आर्य नेता जयसिंह ठेकेदार ने कहा कि आज युवाओं को सही दिशा देने की आवश्यकता है। बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि हमारा सामाजिक जीवन स्वामी इन्द्रवेश जी की देन है। उन्ही की प्रेरणा से हम आज ये सब कार्यक्रम आयोजित कर पा रहे हैं।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक परिषद के प्रधान सहदेव बेधड़क ने कहा कि मैंने स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ लगभग 40 वर्ष कार्य किया लेकिन कभी चेहरे पर शिकन नहीं देखी। सहदेव जी ने स्वामी जी के जीवन पर गीत भी सुनाया। आर्य समाज जालौर के प्रधान दलपत सिंह आर्य ने कहा कि राजस्थान में युवा क्रान्ति अभियान स्वामी इन्द्रवेश जी व श्री मदन सिंह जी की प्रेरणा से आगे बढ़ा। आज भी उनके दिखाये मार्ग पर सभी चल रहे हैं। शेष पृष्ठ 6 पर



प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) को स्वामी इन्द्रवेश स्मृति विद्वत् सम्मान से सम्मानित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी रामवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री विरजानन्द एडवोकेट तथा अन्य

सम्पादक - प्रो. विठ्ठलराव आर्य

संविधान सभा के मुस्लिम सदस्य भी गोवध निषेध चाहते थे

गोवध निषेध पर संविधान सभा में बड़ी रोचक बहस हुई थी। पूर्वी पंजाब के जनरल ठाकुरदास भार्गव, सेठ गोविंददास, प्रो. छिबनलाल सक्सेना, डॉ. रघुवीर, आर. बी. धुलिकर, जैड एच लारी (यूनाइटेड प्रोविन्स मुस्लिम सदस्य) तथा असम से मुस्लिम सदस्य रहे सैय्यद मुहम्मद सैदुल्ला सहित कई विद्वान सदस्यों ने गौमाता के वध निषेध पर अपने विचार रखे थे। और यही अच्छी बात थी उस समय संविधान सभा में उपस्थित रहे सदस्यों (मुस्लिम सदस्यों सहित) ने गोवध निषेध के पक्ष में ही अपने विचार व्यक्त किये थे।

अनुच्छेद 'शो पीस' बनकर रह गया

इन लोगों के सद्प्रयासों और सद्विचारों के चलते भारतीय संविधान की धारा-48 में प्रावधान किया गया कि राज्य गायों बछड़ों तथा अन्य दुधारू और वाहक पशुओं की नस्ल के परीक्षण तथा सुधार के लिए उनके वध पर प्रतिबंध लगाने के लिए कदम उठाएगा। दुर्भाग्य रहा इस देश का कि संविधान का यह अनुच्छेद केवल शो पीस बनकर रह गया।

संविधान सभा और इन समितियों के इस निष्कर्ष के उपरांत भी 1954 में भारत सरकार के पशुपालन विभाग ने फिर एक समिति गोवध बंद करने के लिए उपाय सुझाने के लिए बनाई। लेकिन इस समिति ने गोवध निषेध पर अपने उपाय न सुझाकर गोवध कैसे जारी रखा जा सकता है; इस पर अपने विचार और सुझाव प्रस्तुत किये। समिति ने कहा कि हमारे यहां सौ में से चालीस गायों-बैलों को खिलाने के लिए पौष्टिक आहार है, बाकी 60 गायों-बैलों को तो हम आहार ही नहीं दे पायेंगे। इसलिए सौ में से 60 कमजोर गाय-बैलों को तो हमें मारना ही पड़ेगा।

धिक्कार है

इसके पश्चात् 1938 की पंडित नेहरू की अध्यक्षता वाली कमेटी और उसकी 30-35 उपसमितियों की रिपोर्ट तथा संविधान सभा के विद्वान सदस्यों के राष्ट्रवादी विचारों की उपेक्षा करते हुए इसी (1954 की) समिति की आख्या को भारत में गोवध जारी रखने का कारण घोषित कर दिया गया। परिणाम यह हुआ कि आज तक जितनी गऊएं या बैल काटे जाते हैं, उन सबको वृद्ध और अनुपयोगी दिखाया जाता है, इसमें सरकारी डॉक्टर और संबंधित अधिकारियों की

सांठ-गांठ होती है, जो लाइसेंस धारी कातिलों को इन पशुओं को मारने की स्वीकृति प्रदान करते हैं। इस प्रकार बड़ी ही सावधानी से तथा चुपके से राष्ट्र की आत्मा की तथा संविधान के अनुच्छेद-48 की हत्या कर दी जाती है। जब भी कोई गाय इस देश में कहीं कटती है, या रोजाना कत्लगाहों में मारी जाती है तो वह रोती हुई संविधान सभा के लोगों को तथा 1938 की समिति के सदस्यों को तो शुभाशीष देती है, पर इस देश की आत्मा की हत्या करने वालों को तथा इस हत्या को देखने वालों को धिक्कारती हुई इस संसार से चली जाती है।

अर्थव्यवस्था यदि गाय आधारित होती

यदि भारत में गोवध बंद हो जाता तो सारे विश्व की अर्थव्यवस्था तब गाय आधारित होती। सारे विश्व में ही कोल्ड ड्रिंक्स की बड़ी-बड़ी कंपनियां नहीं होतीं। दूध-दही-लस्सी, मक्खन से पौष्टिक आहार तैयार होता और विश्व में कैंसर सहित सैकड़ों प्राण लेवा बीमारियों का कहीं अता-पता नहीं होता। भारत में कृषि की स्थिति उन्नत होती, क्योंकि गायों के गोबर से उत्तम खाद खेतों को मिलती रहती और स्वस्थ फसल



और स्वस्थ अन्न हजारों घरों में आ रहा होता। आज की तरह रासायनिक खादों से तैयार हो रही प्राणलेवा हरी सब्जियों की समस्या ही कहीं दिखाई नहीं देती और ना ही हम दूषित अन्नौषधियों का सेवन करने के लिए अभिशप्त होते। सारे भारत में हरियाली होती और हम अपने यज्ञ विज्ञान के आधार पर अपने राजस्थान जैसे प्रान्तों में भी हरित क्रांति करने में सफल हो जाते। साथ ही भारत में अमेरिका डॉलर के मुकाबले रुपये के अवमूल्यन का वर्तमान शर्मनाक दौर भी हमें देखने को नहीं मिलता।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए कई वर्ष पूर्व वैज्ञानिक ने एक चेतावनी दी थी कि यदि यहां रासायनिक खादों का प्रयोग इसी प्रकार जारी रहा तो सन् 2050 तक इस क्षेत्र की उर्वरा भूमि पूर्णतया अनुर्वर हो जायेगी। वैज्ञानिकों का कहना है कि रासायनिक खादों के अंधाधुंध प्रयोग से कृषि उपज निरंतर गिर रही है और कृषि योग्य भूमि निरंतर अनुपजाऊ (बंजर) होती जा रही है। यदि गोवध जारी रखने की 1954 ई. की समिति की सिफारिशों की

रिपोर्ट पर ध्यान दिया जाता तो आज यह स्थिति नहीं आती।

11 अगस्त सन् 2003 को अटल सरकार ने देश की आत्मा की पुकार को समझते हुए संसद में पूर्ण गोहत्या निषेध हेतु एक बिल पेश किया। तत्कालीन कृषि मंत्री राजनाथ सिंह ने उक्त विधेयक को पेश ही किया था कि गोहत्या जारी रखने के समर्थक दलों ने (कम्युनिस्ट सबसे आगे थे) इस बिल का जोरदार विरोध आरंभ कर दिया। शोरगुल इतना अधिक था कि भाजपा के कई समर्थक दल भी उसी में शामिल हो गये और एक अच्छी पहल की भ्रूण हत्या करने के लिए सरकार को विवश होना पड़ा। इस प्रकार आशा की एक किरण जगते-जगते रह गयी। पापी अपने पापबोध से उबर नहीं पाए और उसी में डूबकर मर गये।

पर्यावरण सन्तुलन गाय से ही संभव है

वेद ने एक अद्भुत शब्द सहचर्य की खोज की। वास्तव में इस शब्द में ही प्राकृतिक और पर्यावरण संतुलन का रहस्य छिपा है। भारत ने आदिकाल से पर्यावरण संतुलन के लिए सहचर्य का प्रयोग किया है। इसलिए भारतीयों ने जीवन को एक प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्धा न मानकर साथ-साथ चलने और साथ-साथ रहने का आनन्दोत्सव माना और इसी प्रकार जीने का प्रयास किया। पश्चिमी जगत ने अपनी मिथ्या धारणाएं संसार को दीं तथा संसार को नरकगाह या कत्लगाह में परिवर्तित कर दिया। फलस्वरूप सारे संसार में आज उपद्रव, उन्माद और उग्रवाद का ताण्डव नृत्य हो रहा है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के खगोल भौतिकी के रीडर डॉ. मदन मोहन बजाज और उनके साथी डॉ. इब्राहीम व डॉ. विजयराज सिंह ने रूस के पुशीना नगर में सितम्बर, 1994 में संपन्न हुए 'अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान सम्मेलन' में आइंसटीन पेन वेक्स के सिद्धांत के आधार पर अपने बहुचर्चित शोधपत्र में सिद्ध किया कि धरती माता अपनी संतानों का निर्ममता पूर्वक संहार होते देखकर रोती है, क्रंदन करती है, चीखती है, दहाड़ती है, वही भूकंप बन जाती है।

हमने सहचर्य को तिलांजलि दी तो धरती माता ने हमें दंड देना प्रारंभ कर दिया है। दण्ड की यह प्रक्रिया गति पकड़ती जा रही है। प्रत्येक वर्ष बाढ़ों, भूकंपों व ऐसी ही प्राकृतिक आपदाओं का क्रम निरंतर बढ़ रहा है। प्रकृति ने दण्ड हाथ में ले लिया है और मानव अपने अस्तित्व के लिए स्थान खोजता फिर रहा है।

अच्छा हो कि अब भी गौमाता की शरण में आ जाएं, क्योंकि आपत्ति में मां सहायक होती है और मां ही काम आती है। मां अवश्य शरण देगी क्योंकि वह करुणामयी होती है। संविधान के रक्षकों! निहित स्वार्थों में संविधान के भक्षक मत बनो, संविधान की मूल भावनाओं को समझो और गौमाता को यथाशीघ्र राष्ट्रीय पशु घोषित करो। समय की यही पुकार है।

- सेवा सुरभि से साभार

प्राचीन शास्त्रों में मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं

देखो, जैमिनी ने मीमांसा में सब कर्मकाण्ड, पतंजलि मुनि ने योगशास्त्र में सब उपासनाकाण्ड और व्यास मुनि ने शारीरिक सूत्रों में सब ज्ञानकाण्ड वेदानुकूल लिखा है। उनमें पाषाणादि मूर्तिपूजा वा प्रयागादि तीर्थों का नाम तक नहीं लिखा। लिखे कहाँ से? जो कहीं वेदों में होता तो लिखे बिना कभी न छोड़ते। इसलिए लुप्त शाखाओं में भी इस मूर्तिपूजादि का प्रमाण नहीं था।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती

संस्मरण असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे स्वामी इन्द्रवेश जी

- डॉ. महावीर मीमांसक

स्वामी इन्द्रवेश जी सम्भवतः सन् 1954 के आस-पास गुरुकुल झज्जर में अपने गांव सुंडाना (निकट रोहतक) से आये थे। ये गुरुकुल झज्जर की फार्मसी (आयुर्वेदिक) में एक कार्यकर्ता के रूप में आये, सम्भवतः स्कूल से आठवीं कक्षा पास करने के बाद। घर एक साधारण किसान का था, अतः घर वालों को पैसों की आवश्यकता रहती थी। मैं उन दिनों गुरुकुल झज्जर में उच्चतम श्रेणी का ब्रह्मचारी छात्र था। स्वामी जी का बचपन का नाम सम्भवतः कुछ और था जिसे स्वामी ओमानन्द जी महाराज (तत्कालीन आचार्य भगवान देव जी) जो गुरुकुल के आचार्य थे, ने बदल कर इन्द्रदेव रख दिया। इन्द्रदेव जी का परिवार प्रारम्भ से ही एक आर्य समाजी परिवार था और आचार्य भगवान् देव जी का श्रदालु था।

इन्द्रदेव जी का व्यक्तित्व प्रारम्भ से ही अतीव आकर्षक एवं विशेष था। शरीर से सुडोल, सुन्दर, गौरवर्ण और इक्करे होने के कारण अलग से ही पहचाने जाते थे। बुद्धि से प्रखर, मेधावी और मन से स्वस्थ, स्वच्छ, सरल तथा सदाचारी विचारों से परिपूर्ण थे। गुरुकुल झज्जर के औषधालय में काम करते हुए भी गुरुकुल के नियमों के अनुसार प्रातःकाल हम सब ब्रह्मचारियों के साथ उठ जाते थे। शौच, स्नान, व्यायाम आदि भी नित्य प्रातः और सायं अपने कार्य से अवकाश होने के बाद नित्यप्रति नियम से करते थे। मृदुभाषी और कम बोलने का स्वभाव था। घर वालों ने इनका विवाह इनकी इच्छा के विरुद्ध कर दिया अतः बड़े दुःखी और चिन्तित रहते थे। कभी कभी मुझसे ये अपनी बात कर लेते थे।

उन्हीं दिनों बलदेव सिंह (वर्तमान में आचार्य बलदेव जी) भी कालेज से बी.एस-सी. पास कर के झज्जर शहर में हरियाणा के विद्युत विभाग में नियुक्त होकर आये थे। आप भी प्रारम्भ से ही शुद्ध आर्य विचारों के थे अतः अपने कार्यालय के बाद गुरुकुल झज्जर में ही ठहरते थे और गुरुकुल झज्जर को ही अपना स्थायी निवास बना लिया था।

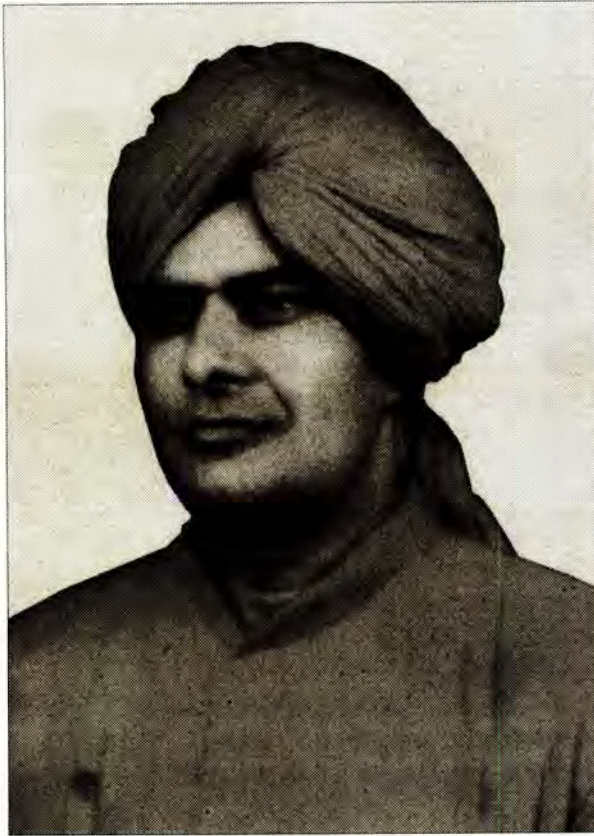
आचार्य बलदेव जी तथा इन्द्रदेव जी में समान विचार और जीवन में कुछ कर गुजरने की प्रबल इच्छा के कारण दोनों में मैत्री हो गई और एक दिन अचानक सब को यह सुनने को मिला कि दोनों गुरुकुल छोड़ कर कहीं अज्ञातवास करने चले गये हैं। बलदेव जी तो अविवाहित ही थे। दोनों के घर वाले बड़े परेशान थे। आचार्य भगवान देव जी का आशीर्वाद दोनों को प्राप्त था। दोनों ने अज्ञातवास करते हुये ब्रह्मचर्य के कठोर नियमों का पालन किया और आर्षपाठ विधि के अनुसार अष्टाध्यायी आदि आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया।

एक वर्ष से अधिक समय तपस्या, ब्रह्मचर्य पालन और अध्ययन में लगा कर श्री इन्द्रदेव जी व श्री बलदेव जी गुरुकुल झज्जर में फिर लौट आये। गुरुकुल झज्जर की आयुर्वेदिक फार्मसी में काम करते समय इन्द्रदेव जी को आचार्य भगवान देव जी के साहित्य के कारण आयुर्वेदिक औषधियों का बड़ा अच्छा ज्ञान हो गया था। इसी समय इन्द्रदेव जी ने आयुर्वेद की कुछ परीक्षाएँ भी पास कर लीं और वे एक अच्छे वैद्य उसी समय से गुरुकुल के माने जाने लगे। आचार्य भगवान देव जी की अनुपस्थिति में वे रोगियों को दवाईयाँ देने का काम करते थे और उनकी सफल चिकित्सा अकेले ही कर देते थे।

जब ये अज्ञातवास से गुरुकुल झज्जर लौटे मैं उन दिनों गुरुकुल झज्जर में अध्यापन और संरक्षक का कार्य आचार्य भगवान देव जी के आदेश के अनुरूप करने लग गया था। इन दोनों ने मुझ से न्याय दर्शन पढ़ने का आग्रह किया और मैंने इन्हें न्याय दर्शन पढ़ाने के लिये अलग से विशेष समय का निर्धारण किया। मैंने देखा कि इन्द्रदेव जी में कितनी उद्भट तार्किक प्रवृत्ति है और दर्शन शास्त्र की गम्भीर गुत्थियों को समझने की कितनी जबरदस्त प्रतिभा है। इसी अध्यापन काल में दोनों ही अपने मन की बात मुझ से कर लेते थे। ऐसा लगता था कि जैसे ये शरीर से तो भिन्न-भिन्न हैं किन्तु इनका हृदय और आत्मा एक ही हैं। दोनों की समाज में

अद्भुत क्रान्ति लाने की अदम्य भावना थी। मुझे अभी भी इनके वचन याद हैं जब ये मुझ से कहते थे कि हम दूसरों का दुःख दर्द दूर करने और समाज की सेवा में अपने आपको कांटों के ऊपर बिठा देंगे और दूसरों को हम अपनी छाती पर निर्भर और निष्कण्टक अनुभव करते हुये चलने को कहेंगे। इन्हीं शब्दों के अनुरूप मेरी प्रेरणा से ये अत्यन्त प्रभावित होते थे और मेरे से ये विचार विमर्श अवश्य करते थे। सामाजिक समस्याओं के अतिरिक्त गुरुकुल की समस्याओं और तत्कालीन कमियों पर भी मुझ से विचार विमर्श होता था। अब यहाँ वह सब लिखना उचित नहीं।

सन् 1956 का हिन्दी आन्दोलन समाप्त हुआ। मैं हिसार बोस्टल जेल से छूट कर गुरुकुल झज्जर आया। लगभग एक वर्ष और बीत गया। आचार्य भगवान देव जी को यह चिन्ता सता रही थी कि गुरुकुल झज्जर का कार्यभार किसे सौंपूँ? मुझ से उन्होंने बहुत आग्रह किया, एकान्त में अनेक प्रकार की बातें इस सम्बन्ध में कीं किन्तु मैंने अपनी असमर्थता इसलिये जताई कि मैं उन शास्त्रों



का अध्ययन पूरा करना चाहता था जिनका निर्देश स्वामी दयानन्द ने आर्षपाठविधि में किया है और जो गुरुकुल झज्जर में नहीं पढ़ाये जाते थे। इनमें विशेषतः पूर्वमीमांसा और ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन करने बनारस चला गया। अध्ययन करके वापस गुरुकुल झज्जर लौटा तो आचार्य भगवान् देव जी को उसी चिन्ता से ग्रस्त पाया। मैंने निवेदन किया कि आपके पास दो विश्वासपात्र, निष्ठावान्, अपना जीवन लगाने वाले ब्रह्मचारी इन्द्रदेव और बलदेव जी हैं तो, इन्हें गुरुकुल का कार्य भार सौंप दो। सचमुच ऐसा ही हुआ। आचार्य भगवान देव जी ने गुरुकुल का समूचा कार्यभार उन्हें सौंप दिया। मैं गुरुकुल छोड़ चुका था। कभी कभी गुरुकुल आता था। इन्द्रदेव जी और बलदेव जी सब वृत्तान्त सुना देते थे। मुझे शीघ्र-शीघ्र गुरुकुल आने का आग्रह करते थे। गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर मैं अवश्य आता था, और इन्द्रदेव जी का वही व्यायाम प्रदर्शन जो पहले मैं दिखवाया करता था देख कर बड़ा प्रसन्न होता था। इसी दौरान श्री इन्द्र देवजी के सम्पर्क में प्रो. श्याम राव (वर्तमान स्वामी अग्निवेश जी) आये जिनका परिचय ब्र. इन्द्रदेव जी ने मुझ से गुरुकुल झज्जर में करवाया। समय की विडम्बना और दुर्भाग्य की बात है कि किन्हीं अन्तरंग विषयों पर ब्र. इन्द्रदेव जी और बलदेव जी का नीतिगत विरोध आचार्य भगवान् देव जी से हो गया और दोनों ने गुरुकुल झज्जर छोड़ दिया। बलदेव जी ने गुरुकुल कालवा खोल दिया और इन्द्रदेव जी सामाजिक कार्यों में प्रो० श्याम राव (स्वामी अग्निवेश जी) के साथ जुट गये। और

एक दिन अचानक यह घोषणा निकली कि दोनों इन्द्रदेव तथा श्यामराव ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास ले रहे हैं। भारत भर के समस्त आर्य जगत् में प्रचुर खुशी की लहर दौड़ गई और दोनों ने निश्चित दिन संन्यास गृहण कर लिया। इन्द्रदेव जी स्वामी इन्द्रवेश और श्याम राव जी स्वामी अग्निवेश बन गये। जीवन भर ये दोनों अभिन्न रहे।

दोनों ही सामाजिक क्रान्ति के कार्यों का मूल राजनीतिक क्रान्ति मानते थे। स्वामी इन्द्रवेश जी इस सम्बन्ध में मुझसे खूब गम्भीर और विस्तार से चर्चा करते थे। निःसन्देह राजनीति सब क्रान्तियों का मूल है किन्तु उसके आधुनिक समय के दोषों से सावधान रहने और बचने की भी उतनी ही महती आवश्यकता है अन्यथा सब किये कराये पर पानी फिर जायेगा। यह मेरा सुझाव उनको सदैव रहता था।

आर्य राष्ट्र बनाने के लिये आर्य सभा की स्थापना की। एक उम्मीदवार को महम चौबीसी के समर्थन से आपने राजनीतिक मंच से चुनाव लड़ाकर विजयी भी बनवाया, किन्तु वह धोखा दे गया। तत्पश्चात् स्वामी इन्द्रवेश जी ने विचार किया कि स्वयं सक्रिय राजनीति में आना चाहिये। इससे पहले वे हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी बन चुके थे। उन दिनों की एक व्यक्तिगत बात है। स्वामी इन्द्रवेश जी गुरुकुल कांगड़ी गये हुए थे और वहाँ वे बीमार हो गये। उनके हाल चाल पूछने मैं दिल्ली से गुरुकुल कांगड़ी पहुँचा। एक दो दिन में जब वे कुछ ठीक अनुभव करने लगे तो मुझे गाड़ी में बिठाकर घूमने निकले। वहाँ भारत माता के मन्दिर में हनुमान जी की लगभग 6 फुट ऊँची विशालकाय मूर्ति है। उस के सामने खड़े हो कर स्वामी इन्द्रवेश जी ने मुझसे कहा की डाक्टर साहब गुरुकुल झज्जर में जब मैं आपको व्यायाम के समय लंगोटे में देखता था तो आपकी जंघायें बिल्कुल हनुमान की इस मूर्ति की तरह ही हृष्ट पुष्ट थीं।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने सन् 1980 में रोहतक क्षेत्र से लोकसभा का चुनाव लड़ा और बड़े भारी बहुमत से विजयी हुये। उनका निवास दिल्ली बन गया और मेरा मिलना जुलना उनसे और अधिक हो गया। राजनीति और राजनीतिज्ञ नेताओं को उन्होंने बड़े निकट से देखा। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया उनको मेरी यह बात और अधिक हृदयंगम होती गयी कि जब राजनीति को प्राप्त करने के साधन ही प्रथमतया दूषित हैं तो राजनीति द्वारा देश का सुधार कैसे निर्दोष हो पायेगा? यद्यपि राजनीति देश सेवा का एक अनिवार्य साधन है और अच्छे लोगों को यह क्षेत्र बुरे लोगों के लिये खाली नहीं छोड़ना चाहिये, किन्तु इससे पहले देश के लोगों का राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण अनिवार्य है। खैर! स्वामी इन्द्रवेश जी का राजनीति के प्रति इसी कारण कुछ मोह भंग होता गया। मैं यह भी चाहता था कि श्री ओमानन्द जी महाराज के प्रति इनका मनमुटाव दूर हो। अनेक आर्यजनों से मैंने अपनी प्रबल इच्छा को प्रकट भी किया और सौभाग्य से यतिमण्डल के प्रयास से यह कार्य भी सम्पन्न हो गया।

अन्तिम दिनों में स्वामी इन्द्रवेश जी ने दयानन्द मठ रोहतक के प्रधान होने के नाते मुझे एक मासिक सत्संग में प्रवचन करने के लिये आमन्त्रित किया था। मैं यथासमय प्रवचन करके आ गया, किन्तु स्वामी इन्द्रवेश जी को उसी दिन किसी अनिवार्य कार्यवश कहीं जाना पड़ गया, अतः वे मेरा प्रवचन नहीं सुन पाये। एक दो दिन के बाद उनका दूरभाष मेरे पास आया और उनके वे शब्द अभी भी मुझे सुनायी पड़ रहे हैं कि डॉक्टर साहब! आप ने प्रवचन में झण्डे गाड़ दिये।

स्वामी इन्द्रवेश जी ने अनेक क्रान्तिकारी कार्य किये। अनेक आश्रम खोले, अनेक विद्वान् कर्मठ, ब्रह्मचारी और संन्यासी शिष्य तैयार किये। उनके निधन की क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। उन जैसे विद्वान्, कर्मठ, वीतराग, निःस्वार्थ, ब्रह्मचारी संन्यासी जनों की आर्य समाज को अत्यन्त आवश्यकता है।

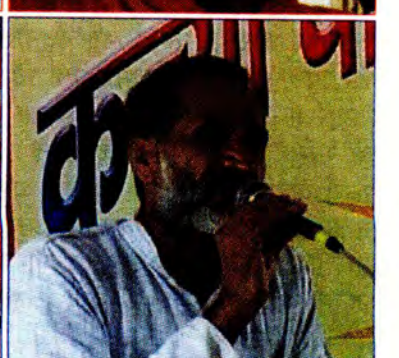
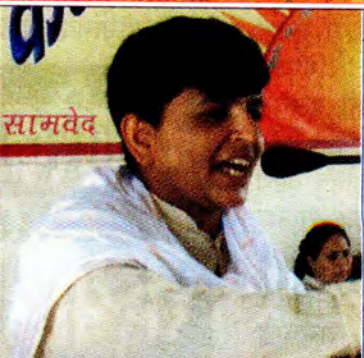
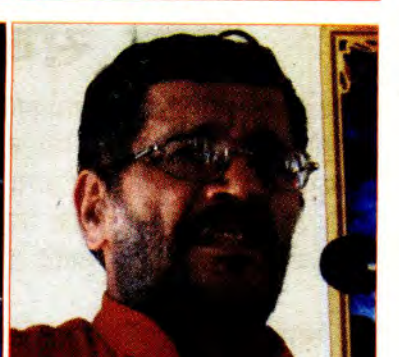
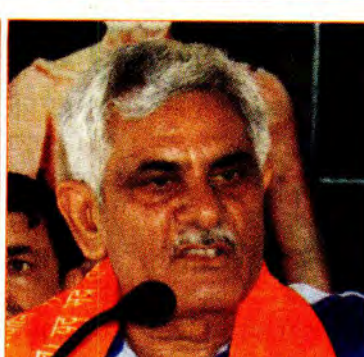
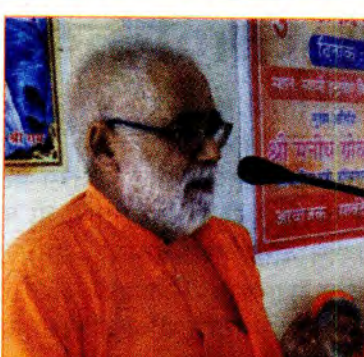
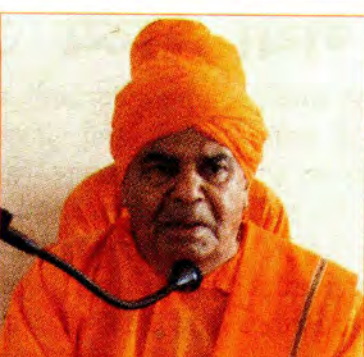
—वैदिक शोध सदन,

ए-3/99, पश्चिम विहार दिल्ली-63

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सम्मान समारोह की चित्रमय झलकियाँ



स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सम्मान समारोह की चित्रमय झलकियाँ



‘सत्यार्थ प्रकाश का बार-बार अध्ययन जीवन पथ का मार्गदर्शक एवं हितकारी’

— मनमोहन कुमार आर्य



महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का निर्माण लोगों को वेदों व सत्य धर्म का परिचय देने के लिए प्रथम सन् 1874-75 में किया था। इस ग्रन्थ का संशोधित व परिवर्धित रूप उनकी सन् 1883 में देहावसान के बाद प्रकाशित हुआ जिसका निरन्तर प्रकाशन व प्रचार हो रहा है। सत्यार्थ प्रकाश को वैदिक मान्यताओं का विषयानुसार वर्णन ग्रन्थ कह सकते हैं जो कि एक ग्रन्थ मात्र न होकर सत्य वैदिक मान्यताओं का प्रमुख धर्म ग्रन्थ है। इसमें तीन शाश्वत सत्ताओं ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित मनुष्य के

हर आयु के कर्तव्यों व सृष्टि उत्पत्ति से लेकर प्रलयावस्था तक तथा बन्धन-मोक्ष आदि अनेक विषयों का वर्णन है। हमने इस ग्रन्थ को पढ़ा है और इससे उत्पन्न ज्ञान व विवेक के आधार पर हम यह अनुभव करते हैं कि मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाने व संसार का यथार्थ परिचय कराने वाला इससे अधिक सरल व उपयोगी ग्रन्थ संसार में अन्य कोई नहीं है। यह अनुभव केवल हमारा ही नहीं है अपितु इसका अध्ययन करने वाले प्रायः सभी व अधिकांश लोगों का है जिसमें आर्यजगत के वरिष्ठ विद्वान पं. गुरुदत्त विद्यार्थी (1864-1890) भी सम्मिलित हैं। उनके जीवन का एक प्रेरणादायक प्रसंग ही लेख की भूमिका बना है। हम यहां यह भी कहना चाहते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश में जो ज्ञानराशि है, उसका देश व जीवन के विभिन्न पहलुओं पर जो प्रभाव हुआ है उसका मूल्यांकन अभी तक नहीं हुआ है। यदि देखें तो सत्यार्थ प्रकाश ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कान्ति कर देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर किया है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश लिख कर सम्पूर्ण मानव जाति पर एक महान उपकार किया है। इस ग्रन्थ के प्रभाव से ही देश को स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, श्यामजी कृष्ण वर्मा, महादेव गोविन्द रानाडे, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह आदि समाज सुधारक व देश भक्त प्रदान मिले हैं। ऐसे ही कोटि कोटि लोग विगत 140 वर्षों में सत्यार्थ प्रकाश से प्रभावित होकर देश व जाति के लिए लाभकारी सिद्ध हुए हैं। यहां हम पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी के जीवन का सत्यार्थ प्रकाश से जुड़ा एक प्रसंग प्रस्तुत कर रहे हैं। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी लाहौर में संस्कृत व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी पढ़ाते थे और कक्षा के विद्यार्थियों से कहते थे कि प्रातः व सन्ध्या के पश्चात् एक घण्टा तक सत्यार्थप्रकाश अवश्य पढ़ा करो। वे कहते थे कि मैंने ग्यारह बार सत्यार्थप्रकाश को ध्यान से पढ़ा है और जब-जब इस ग्रन्थ को उन्होंने पढ़ा, उन्हें इसके नये-नये अर्थ सूझे। वे कहा करते थे कि यह खेद का बात है कि सत्यार्थप्रकाश को लोग कई बार

नहीं पढ़ते। एक बार प्राणायाम की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा था कि प्राणायाम असाध्य रोगों को भी दूर कर सकता है। उन्होंने बताया था कि कभी-कभी किसी स्थूलकाय व्यक्ति को यह प्राणायाम कुछ दुर्बल बना देता है परन्तु थोड़े समय के पश्चात् वह व्यक्ति सशक्त व स्वस्थ हो जाता है। उनका यह कथन था कि संसार में सबसे उपयोगी वस्तु निःशुल्क मिला करती है। अतः भयंकर रोगों की सर्वोत्तम औषधि वायु है और यह वायु प्राणायाम द्वारा औषधि का काम दे सकती है।

इसी से मिलता-जुलता एक संस्मरण उनके अभिन्न मित्र लाला जीवनदास ने अन्यत्र भी उल्लेखित किया है जहां वह लिखते हैं कि “जितना अधिक वे स्वामी दयानन्द की पुस्तकों का अध्ययन करते थे, महर्षि के प्रति उनकी भक्ति उतनी ही

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश लिख कर सम्पूर्ण मानव जाति पर एक महान उपकार किया है। इस ग्रन्थ के प्रभाव से ही देश को स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, श्यामजी कृष्ण वर्मा, महादेव गोविन्द रानाडे, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह आदि समाज सुधारक व देश भक्त मिले हैं। ऐसे ही कोटि कोटि लोग विगत 140 वर्षों में सत्यार्थ प्रकाश से प्रभावित होकर देश व जाति के लिए लाभकारी सिद्ध हुए हैं।

प्रगाढ़ और वैदिक धर्म में उनकी श्रद्धा उतनी ही सुदृढ़ होती जाती थी। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश को कम से कम 18 बार पढ़ा था। वे कहते थे कि जितनी बार मैं इसे पढ़ता हूँ, मुझे मन और आत्मा के लिए कुछ न कुछ नवीन भोजन मिलता है। उनका कथन है कि यह पुस्तक गूढ़ सच्चाइयों से भरी पड़ी है।”

हमें पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के मात्र 26 वर्ष से भी कुछ कम दिनों के अति व्यस्त जीवन में 18 बार सत्यार्थप्रकाश को पढ़ना किसी आश्चर्य से कम दृष्टिगोचर नहीं होता। जिस व्यक्ति ने एम.ए. विज्ञान में अविभाजित पंजाब जिसमें वर्तमान का पूरा पाकिस्तान, भारत के पंजाब, हिमाचल, हरयाणा व दिल्ली के भी कुछ भाग शामिल थे, में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया हो व अपने अध्ययन काल में ही अनेकानेक इतर विषयों का अध्ययन करता रहा हो, प्रवचन देता हो, पत्रों का सम्पादन करता हो, आर्यसमाज के सत्संगों व उत्सवों में प्रवचन करता हो व डी.ए.वी. आन्दोलन के प्रचार के लिए देश भर में भ्रमण व अपील करता रहा हो, उसका 26 वर्षों के अल्प जीवन काल में 18 बार सत्यार्थप्रकाश पढ़ना निःसन्देह आश्चर्यजनक है। सत्यार्थ प्रकाश का महत्व इसलिये भी है कि इसमें ईश्वर व धर्म सम्बन्धी अनेक यथार्थ तथ्यों का प्रतिपादन है जो समकालीन व इससे पूर्व के साहित्य में उपलब्ध नहीं होते। इसको इस रूप में भी समझ सकते हैं कि मनुष्य जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है, यह यथार्थ रूप में सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर ही हृदयंगम होता है। सच्ची अहिंसा की शिक्षा इस ग्रन्थ को पढ़कर मिलती है। जीवन के उद्देश्य मोक्ष के अतिरिक्त मोक्ष प्राप्ति के साधनों को भी तर्क-वितर्क के

माध्यम से समझाया गया है जिसे सच्चे मन से अध्ययन करने वाला स्वीकार करता है। यह पुस्तक ऐसी है कि जिसके खण्डन में अभी तक कोई ग्रन्थ तैयार नहीं हुआ जबकि अन्य ग्रन्थों की मान्यताओं पर उसी मत के अनुयायियों में मतभेद पाये जाते हैं और कईयों में तो तर्क की इजाजत ही नहीं है। अतः सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से इसके अध्येता को जो लाभ प्राप्त होता है वह अन्य मत-मतान्तरों के अनुयायियों को प्राप्त नहीं होता।

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी की सत्यार्थप्रकाश के प्रति जो टिप्पणी की गई है वह इस लिए भी महत्वपूर्ण है कि वह एक असाधारण व्यक्ति थे। हमारे देश में एक प्रकार से एक अन्धपरम्परा चलती रही है कि विदेशी विद्वान कुछ भी कहें, उसे प्रमाणित स्वीकार किया जाता है और अपने देश के चिन्तकों व विचारकों के सत्य विचारों को भी विदेशी विद्वानों के भ्रमोत्पादक दृष्टिकोण से ही देखा जाता है। गुरुदत्त जी ने इस परम्परा को स्वीकार न कर विदेशी विद्वानों के चिन्तन, मान्यताओं व निष्कर्षों पर आपत्तियां ही नहीं की अपितु उनके खण्डन में लेख व पुस्तकें लिखी जिससे वह निरुत्तर हो गये। आज भी उनके उपलब्ध साहित्य को पढ़ने पर उनकी विलक्षण बुद्धि से प्रस्फुटित विचारों को

पढ़कर लाभ उठाया जा सकता है। उन्होंने अपने जीवन में वेद और वैदिक साहित्य के प्रचार में जो योगदान दिया है वह चिरस्मरणीय है। उन्होंने वैदिक साहित्य को समृद्ध किया। विदेशी विद्वानों का मिथ्या दम्भ चकनाचूर किया। वैदिक विचारों को अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत कर अंग्रेजी शिक्षित वर्ग में सबसे पहले प्रचारित व प्रकाशित किया। उन्होंने जीवन का एक-एक क्षण वेदों के प्रचार व प्रसार में व्यतीत किया। हम अनुमान करते हैं कि यदि उन्हें 60-70 वर्ष का जीवन मिला होता तो वह इतना कार्य करते कि जिसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। उन्होंने अपने जीवन में महर्षि दयानन्द का अनुकरण कर उनके जैसा बनने का प्रयास किया था। वह अधिक से अधिक जितना कर सकते थे उन्होंने किया। उन्होंने 26 वर्ष की आयु में जितना कार्य किया है, उनसे पूर्व शायद ही किसी वैदिक विद्वान व धर्म प्रचारक ने सारी दुनिया में किया होगा। हमारा यह भी अनुमान है कि यदि उन्हें 70 वर्ष का जीवन मिला होता तो वह 100 से अधिक बार सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करते और इससे उनके व्यक्तित्व में जो श्रेष्ठता व महानता उत्पन्न होती, उसका हम केवल अनुमान ही कर सकते हैं। उनके प्रेरक जीवन का अध्ययन युवा पीढ़ी के लिए आदर्श है। सभी को उनका जीवन चरित पढ़कर प्रेरणा लेनी चाहिये।

पता: 196 चुकखूवाला-2, देहरादून-248001
फोन: 09412985121

पृष्ठ-1 का शेष

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सम्मान समारोह एवं युवा संकल्प कार्यक्रम का किया गया भव्य आयोजन

मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी प्रधान श्री रामपाल शास्त्री ने कहा कि स्वामी जी की पुण्यतिथि पर हम संकल्प लेते हैं कि हम अपने कार्यों की गति रुकने नहीं देंगे। डॉ. कैलाश कर्मठ, प्रवेश आर्या, चौधरी सूबे सिंह, रमेश कोच, डॉ. भूप सिंह, आदि ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सम्मान समारोह में आर्य विरक्त सम्मान स्वामी ओमवेश जी को, वैदिक विद्वत् सम्मान डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई, श्री रघुबीर वेदालंकार (दिल्ली), रामस्वरूप रक्षक (अजमेर) को दिया गया, युवा सम्मान राजस्थान के जितेंद्र सिंह, हिसार के देवेंद्र सैनी, कैथल के सत्यवीर आर्य, जींद के पवन को दिया गया जबकि आर्य वीरांगना सम्मान सोनीपत की सुनीता, गोहाना की गुलाब कौर, जालोर की प्रीति आर्या, रोहतक की मनीषा भारती व झज्जर की रिकू आर्या को प्रदान किया गया, जबकि भजनोपदेशक सम्मान कलकत्ता के कैलाश कर्मठ को दिया गया।

इनके अतिरिक्त 21 व्यक्तियों को आर्य रत्न सम्मान दिया गया। झज्जर के रमेश कौशिक, जींद के मनीष नरवाल, कैथल के होशियार सिंह व सुरेंद्र पहलवान, श्री पाल आर्य व गुलाब सिंह मुज्जफरनगर, डॉ. बलबीर आर्य जुलाना, किशन चन्द्र बब्बर, हांसी, रामचन्द्र ठेकेदार, टिटौली, वेद प्रकाश आर्य, मंत्री गुरुकुल सिंहपुरा, धर्मेश पहलवान, छपरा, जगदीश सीवर, सिरसा, मास्टर देवेंद्र फरमाना, प्रवीण आर्य सोनीपत आदि मुख्य थे।

कार्यक्रम का मुख्य संचालन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरियाणा के प्रधान दीक्षेन्द्र आर्य ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री सज्जन राठी, बलवंत सिंह व जोगेंद्र आर्य, इंदरपाल आर्य सिरसा, माता मूर्ति देवी, आजाद सिंह बांगड़, कर्मबीर खरकड़ा, सूरजमल आर्य खटकड़, दलबीर आर्य व जयवीर सोनी मुकलान, राजेश आर्य, बादल आर्य, अजित पाल, अजयपाल आर्य, विवेकानंद आर्य, प्रदीप कुमार, सोनू आर्य, राजबीर वशिष्ठ, डॉ. नारायण सिंह, बलवान सिंह, रामचन्द्र

ठेकेदार, रिकू आर्या, शशि आर्या, सुमन आर्या, रीमा आर्या, सुनीता आर्या, डॉ. रणबीर खासा, सहदेव समर्पित, सुभाष आर्य व संसार सिंह बिजनौर, रमेश यादव, नंदराम ओला, हरदेव आर्य शिवगंज, पुष्पेंद्र आर्य जालौर, जयभगवान आर्य व सुभाष आर्य झज्जर, जयपाल आर्य व किरणपाल आर्य कैथल, मास्टर श्यामलाल आर्य, विवेकानंद शास्त्री, सुनील कुमारी, विद्यासागर शास्त्री, अजमेर शास्त्री, जयकुमार शास्त्री, भूपेश आर्य, स्वामी सोमानंद आदि का विशेष सहयोग रहा।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

आर्य समाज फरटिया भीमा, तहसील लोहारू, जिला-भिवानी का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न



आर्य समाज फरटिया भीमा, तहसील-लोहारू, जिला-भिवानी का वार्षिकोत्सव 11 जून, 2017 को बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। उत्सव में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सीकर से सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी, आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क, श्री ज्ञानेन्द्र सिंह तेवतिया आदि ने विशेष रूप से भाग लिया।

इस अवसर पर अपने ओजस्वी भाषण में स्वामी आर्यवेश जी ने किसानों पर हो रहे अत्याचार एवं शोषण की कड़े शब्दों में निन्दा की। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किसानों को राजाओं का भी राजा बताया है किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि राजाओं के राजा किसान को

अपने उत्पादन का लाभकारी मूल्य मांगने पर सरकार उन्हें गोलियों से भून रही है। स्वामी आर्यवेश जी ने मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में मारे गये किसानों को श्रद्धांजलि देते हुए मध्य प्रदेश सरकार की कड़े शब्दों में आलोचना की। उन्होंने कहा कि आजाद भारत में अपने अधिकारों की माँग करना अपराध माना जाता है। यह कैसी विडम्बना है कि आज मेहनतकश किसान जो अनाज पैदा करके दुनिया का पेट भरता है उसी को गोली का शिकार होना पड़ रहा है। स्वामी जी ने गाँव के किसानों, मेहनतकश मजदूरों, नौजवानों तथा महिलाओं का आह्वान किया कि वे अब व्यवस्था परिवर्तन के लिए संघर्ष प्रारम्भ करें। व्यवस्था परिवर्तन के बिना महत्वपूर्ण समस्याओं का समाधान किसी सरकार के पास नहीं है। स्वामी जी ने बताया कि आर्य समाज ने समय-समय पर किसान आन्दोलन चलाकर उन्हें न्याय दिलवाया है। 1973 में आर्य समाज के महान संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी ने गेहूँ के भाव को लेकर दिल्ली के वोट क्लब पर आमरण अनशन किया था और 18 दिन बाद सरकार ने उनकी मांगों को मानकर गेहूँ का भाव 76 रुपये से बढ़ाकर 105 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया था। स्वामी आर्यवेश जी ने पूरे देश में किसान आन्दोलन चलाने पर बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि देश में बढ़ती हुई शराब की खपत किसानों के लिए एक चुनौती है। अतः शराबबन्दी के लिए भी किसान आदि परिश्रम करने वाले लोगों को संघर्ष करना ही होगा। क्योंकि शराब सब पापों

की जननी है। अतः शराब के विरुद्ध भी राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन चलाना होगा।

इस अवसर पर आर्य युवा नेता श्री रामअवतार आर्य गांव के सरपंच श्री ओमवीर आर्य, आर्य समाज के प्रधान श्री जयनारायण, मंत्री श्री शेर सिंह, शराबबन्दी आन्दोलन को समर्पित श्री राकेश आर्य, श्री भंवर सिंह आर्य लोहारू, कप्तान रामकुमार आर्य, श्री राजेश डांगी आदि ने स्वामी जी का माल्यार्पण से स्वागत किया। युवा विद्वान श्री अजय कुमार शास्त्री ग्राम-मांडवा ने मंच का कुशल संयोजन किया। स्वामी जी से पूर्व प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क ने अपने क्रांतिकारी भजनों से लोगों को जोश से भर दिया। इसी प्रकार यह कार्यक्रम दो दिन तक समारोह पूर्वक चलता रहा। 11 जून को सीकर से सांसद आर्य संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी भी उत्सव में पधारे।



विश्व वेद सम्मेलन का होगा भव्य आयोजन

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि दिनांक 24-4-2017 को आर्यसमाज डिफेंस कॉलोनी में आयोजित आर्य विद्वानों की बैठक में निर्णय लिया गया कि आर्यसमाज की वैदिक विचारधारा को विश्व पटल पर प्रतिष्ठापित करने हेतु एक विश्व वेद सम्मेलन का अत्यन्त भव्य एवं प्रभावी रूप से आयोजन किया जाये।

अभी तक वेदों को प्रायः धार्मिक कर्मकाण्ड से ही जोड़कर देखा जाता है जिससे उसकी सामाजिक उपयोगिता पर जन साधारण का ध्यान नहीं जाता है। उधर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व शांति एवं विकास के लिए यू.एन.ओ. का गठन हुआ और 1948 में मानव अधिकार का घोषणा पत्र जारी हुआ यह

बहुत कुछ वेद की मान्यताओं पर आधारित है। यूनेस्को ने ऋग्वेद को विश्व मानवता की प्राचीनतम धरोहर के रूप में स्वीकार किया। भारत के प्रधानमंत्री के रूप में इन्दिरा गांधी से लेकर नरेन्द्र भाई मोदी ने यू.एन.ओ. के पटल पर वेदों का संदर्भ दिया। अब उसी यू.एन. ने विश्व के 193 राष्ट्र राज्यों को 17 चुनौतियों-गरीबी, भुखमरी, बीमारी, अशिक्षा, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक विषमता, जाति, लिंग, मत, पंथ व क्षेत्रियता आधारित भेदभाव, आदि को 2016 से शुरू कर 2030 तक पूरा करने का संकल्प पारित किया है। पेरिस में जलवायु संकट से उबरने के लिये 190 देशों ने इसी तरह का फैसला किया है।

हमारा विश्व वेद सम्मेलन इन सभी मुद्दों पर गंभीर विचार

विमर्श-संगोष्ठी आयोजन कर अपना वैदिक घोषणा पत्र जारी करेगा।

अतः इस सम्मेलन के माध्यम से यह प्रयास होगा कि आज विश्व के सम्मुख विभिन्न चुनौतियों-समस्याओं के समाधान हेतु विद्वज्जन वैदिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करें। यह सम्मेलन दिनांक 15, 16 व 17 दिसम्बर, 2017 को नई दिल्ली में होना प्रस्तावित है तथा इसे एक अभिनव रूप में आयोजित किया जायेगा।

— आनन्द कुमार

संयोजक, विश्व वेद सम्मेलन

मो. 9810764795

काशी आर्य समाज, बुलानाला का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न शराब संस्कारों को बिगाड़ रही है

योगी सरकार से प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी की माँग

आज प्रदेश और देश में शराब का बढ़ता प्रचलन गम्भीर चिन्ता का विषय है, शराब सामाजिक शिष्टाचार और संस्कारों को बिगाड़ रही है, योगी सरकार को बिहार प्रान्त की ही तरह उत्तर प्रदेश में भी शराबबन्दी पूरी तरह लागू करना चाहिए, प्रदेश में आर्य समाजों का शिरोमणि संगठन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश शराबबन्दी लागू कराने हेतु कटिबद्ध है — उक्त विचार आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा काशी आर्य समाज के अधिवेशन हेतु नियुक्त पर्यवेक्षक डॉ. जयप्रकाश भारती ने बतौर मुख्य अतिथि बुलानाला स्थित आर्य समाज में व्यक्त किये।

काशी आर्य समाज, बुलानाला के वार्षिक अधिवेशन एवं निर्वाचन की अध्यक्षता श्रीनाथ सिंह पटेल ने की, निर्वाचन में सर्वश्री श्रीनाथ सिंह पटेल प्रधान, डॉ. प्रमिला बेरी, ज्ञान प्रकाश आर्य, शम्भूनाथ जी तथा विजय कुमार वर्मा उपप्रधान, प्रकाश नारायण शास्त्री मंत्री, विवेक सिंह एडवोकेट, बृजभूषण सिंह, लालचन्द आर्य, प्रतिभा सिंह सोनी उपमंत्री, डॉ. विशाल सिंह कोषाध्यक्ष, बृजमोहन जी प्रचार मंत्री, सरोज कुमार मिश्रा एडवोकेट पुस्तकाध्यक्ष, हरिहर प्रसाद सेठ प्रतिष्ठित सदस्य, अशोक कुमार आर्य, शशि शेखर पाण्डेय, सुरेश सेठ, डॉ. गायत्री आर्या अन्तरंग सदस्य तथा डॉ. विशाल सिंह, ज्ञान प्रकाश आर्य, विवेक सिंह एडवोकेट आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए प्रतिनिधि चुने गये।

— श्रीनाथ सिंह पटेल-प्रधान, श्री प्रकाश नारायण शास्त्री-मंत्री

शोक समाचार

दुखित मन से कहना पड़ रहा है कि स्वामी धर्मानन्द सरस्वती वरिष्ठ सदस्य वैदिक विरक्त मण्डल टिटौली, रोहतक की धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती देवी जी का देहावसान दिनांक 11 जून, 2017 को अपरान्ह 2.30 बजे सर्वोदय अस्पताल फरीदाबाद में हो गया। इस दुःख की घड़ी में वैदिक विरक्त मण्डल और सार्वदेशिक सभा परिवार उनके साथ है। और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्राप्त करावे और उनके निधन से परिवार को इस असह्य कष्ट को सहने की शक्ति प्रदान करे। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन स्वामी धर्मानन्द जी के मूल ग्राम कौकेरा (निकट अकबरपुर) जिला मथुरा में दिनांक 20 जून, 2017 मंगलवार को प्रातः 10 बजे किया गया है।

— स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती, मथुरा

आर्य समाज नवी करीम, दिल्ली के पुरोहित श्री ऋषिपाल शास्त्री जी को पत्नी शोक



आर्य समाज नवी करीम, दिल्ली के पुरोहित श्री ऋषिपाल शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती किरण आर्या का 3 जून, 2017 को दोपहर 2.15 बजे निधन हो गया, वे 45 वर्ष की थीं। श्रीमती किरण आर्या एक धर्मपारायण महिला थीं तथा अपने पति के सामाजिक कार्यों में कन्धे से कन्धा मिलाकर उनका सहयोग करती थीं। आर्य समाज के कार्यों में उनका योगदान अनुकरणीय था। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रही थीं। गम्भीर बीमारी के चलते काफी इलाज कराने के उपरान्त भी उन्हें बचाया नहीं जा सका। वे अपने पीछे दो पुत्र प्रवीण आर्य तथा राहुल आर्य को बिलखता हुआ छोड़ चली गईं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

उनकी स्मृति में दिनांक 14 जून, 2017 को आर्य समाज अनार कली, मंदिर मार्ग पर अपरान्ह 3 से 5 बजे तक श्रद्धांजलि सभा का

आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, डॉ. अनिल आर्य, आचार्य अमरदेव शास्त्री, श्री सुशील नागपाल प्रधान आर्य समाज नवी करीम तथा श्री मोहन लाल मंत्री आर्य समाज नवी करीम, श्री जगमेन्द्र सिंह कंडेरा-वरिष्ठ नेता भाजपा, श्री नरेन्द्र वेदालंकार, श्री यशपाल शास्त्री, श्री कुंवरपाल शास्त्री, श्री अभयदेव शास्त्री आदि ने विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर दिल्ली की अनेकों आर्य समाजों के पुरोहितों तथा भारी संख्या में लोगों ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इस अवसर पर अनेकों आर्य समाजों तथा विभिन्न संस्थाओं की तरफ से शोक प्रस्ताव भेजे गये थे जिन्हें पढ़कर सुनाया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री रघुराज शास्त्री इन्द्रपुरी, दिल्ली ने किया।

आर्य समाज सैक्टर-9, पंचकुला, चण्डीगढ़ में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का प्रभावशाली उद्बोधन आर्य समाज के प्रधान श्री डी.वी. बत्रा द्वारा स्वामी आर्यवेश जी का किया गया शानदार स्वागत



गत् 11 जून, 2017 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का आर्य समाज पंचकुला, सैक्टर-9 में प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। आर्य समाज के प्रधान श्री डी.वी. बत्रा के विशेष आमंत्रण पर स्वामी आर्यवेश जी आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित हुए तथा उनका क्रांतिकारी उद्बोधन हुआ। उन्होंने अपने प्रभावशाली उद्बोधन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। स्वामी जी के इस विशेष प्रवचन में पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विक्रम कुमार विवेकी, डी.ए.वी. कालेज चण्डीगढ़ के पूर्व प्रिंसिपल श्री रमेश जीवन, श्री कृष्णचन्द गर्ग, श्री अशोक आर्य, आर्य समाज सैक्टर-22 के पूर्व प्रधान श्री सोमदेव शास्त्री आदि के अतिरिक्त अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर अपने एक घण्टे के धारा प्रवाह ओजस्वी प्रवचन में स्वामी आर्यवेश जी ने कर्म सिद्धान्त पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि परमात्मा ने पशुओं, कीट-पतंगों आदि को स्वाभाविक ज्ञान प्रदान किया है। इनके बच्चे जन्म से ही आवश्यक कार्य करने लगते हैं, लेकिन मानव जाति को स्वाभाविक ज्ञान परमात्मा ने प्रदान नहीं किया, उसे सबकुछ सीखना पड़ता है और इसके लिए उसे नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए स्वामी जी ने कई उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया कि नैमित्तिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें वेद के ज्ञान का सहारा लेना पड़ता है, क्योंकि वेद ही संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक है और इसके ज्ञान को परमात्मा ने मानव मात्र की उन्नति के लिए चार ऋषियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। वेद परमात्मा की वाणी है। इसी नैमित्तिक ज्ञान को प्राप्त करके मानव निरन्तर आगे बढ़ रहा है। वेद

ज्ञान का आदि मूल स्रोत है। स्वामी जी ने विभिन्न सम्प्रदायों, पंथों की विस्तृत चर्चा करते हुए वेद ज्ञान को सर्वोपरि बताया और कहा कि कालान्तर में प्रचलित सभी मत, सम्प्रदाय वेदों से ज्ञान लेकर और अपने स्वार्थों के अन्तर्गत कुछ मिलावट करके इन सम्प्रदायों और पंथों के माध्यम से मानव जाति को बांटने का कार्य कर रहे हैं। स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की विशेष घटनाओं का दिग्दर्शन कराते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने विलुप्त हो गई वेद की मान्यताओं को फिर से उजागर किया और दुनिया के लोगों का आह्वान किया कि वेदों की ओर लौटो। स्वामी जी ने वेद के मनुर्भव दैव्यम जन्म मंत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि जब तक हम मनुष्य नहीं बन जायेंगे तब तक सुख और शांति की कामना कल्पना मात्र ही रहेगी। स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर की बनाई इस सृष्टि में परस्पर सहयोग, सहृदयता एवं सौहार्द की भावना जब तक नहीं बनेगी तब तक दुनिया में चल रहे सभी प्रकार के झगड़े-झंझट, मार-काट तथा अशांति ही रहेगी। विश्वशांति या सुख आदि की कल्पना करना व्यर्थ है। उन्होंने कहा कि निष्काम कर्म करने से मानव जीवन सफलता को प्राप्त होता है और निष्काम कर्म करने के लिए हमें सर्वप्रथम ब्रह्मयज्ञ के लिए तत्पर होना पड़ेगा, क्योंकि ब्रह्मयज्ञ करने से हमें परमात्मा की समीपता प्राप्त होती है और परमात्मा के गुणों का समावेश हमारे जीवन में प्रारम्भ हो जाता है और हम निष्काम कर्म करने के लिए प्रवृत्त होने लगते हैं। अतः ब्रह्मयज्ञ करने का व्रत हम सभी को लेना चाहिए।

आर्य समाज के प्रधान श्री बत्रा जी ने स्वामी जी का विशेष सम्मान किया और सार्वदेशिक सभा के लिए 5100 रुपये की राशि दान स्वरूप भेंट की।

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

आर्य समाज गंगाना, जिला-सोनीपत के वार्षिकोत्सव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ विशेष उद्बोधन

गत् 4 जून, 2017 को आर्य समाज गंगाना का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष की भांति समारोह पूर्वक मनाया गया। गाँव के पूर्व सरपंच श्री कृष्ण आर्य तथा उनके भाई श्री बलराम आर्य द्वारा प्रतिवर्ष अपने निजी साधनों से आयोजित होने वाले इस उत्सव में ग्राम गंगाना तथा आस-पास के कई गाँव के प्रतिष्ठित लोग सम्मिलित होते हैं तथा श्रीकृष्ण आर्य एवं श्री बलराम आर्य की ओर से सहभोज की भी व्यवस्था की जाती है।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी 4 जून को उक्त कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए पधारे। उन्होंने यज्ञ के अवसर पर बहुत ही प्रभावशाली व्याख्यान दिया। स्वामी जी ने उपस्थित गणमान्य महानुभावों का आह्वान किया कि कन्या भ्रूण हत्या तथा नशाखोरी के विरुद्ध जबरदस्त मोर्चा लगाने का समय आ गया है। हम सभी को बड़ी मजबूती के साथ इन सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध खड़े हो जाना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि यदि समय रहते हम लोग उक्त बुराईयों के विरुद्ध आवाज नहीं उठावेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब यह सभी बुराईयों हमारे बच्चों तथा हमारे परिवारों को बर्बाद कर देंगी।

स्वामी आर्यवेश जी ने ग्राम-गंगाना के सरपंच से शराबबन्दी के लिए प्रस्ताव पास करने का आग्रह किया और गांव को नशामुक्त गांव बनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर उपस्थित श्रोताओं ने स्वामी जी को शराबबन्दी आन्दोलन में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था पूर्व सरपंच श्री कृष्ण कुमार तथा श्री बलराम आर्य ने अत्यन्त सुन्दर ढंग से की थी। कार्यक्रम के पश्चात् शानदार प्रीतिभोज का आयोजन किया गया था जिसमें सैकड़ों लोगों ने सुस्वादु भोजन का आनन्द उठाया।

आर्य समाज वेद प्रचार समिति, मोहाली चण्डीगढ़ में भजन एवं प्रवचनों का शानदार कार्यक्रम आयोजित सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी भी हुए सम्मिलित

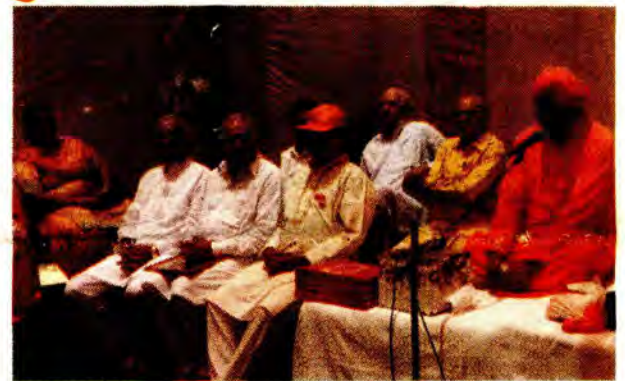
गत् 11 जून, 2017 को आर्य समाज वेद प्रचार समिति मोहाली के तत्वावधान में वेद प्रचार का शानदार आयोजन मोहाली पार्क में आयोजित किया गया। इस अवसर पर चण्डीगढ़, राजपुरा और पंचकुला की विभिन्न आर्य समाजों के सैकड़ों आर्य महानुभावों ने भाग लिया। इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय मिशनरी श्री मेजर विजय आर्य ने किया था। ज्ञातव्य है कि मेजर विजय आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शशि वर्मा की शादी की 40वीं सालगिरह भी उसी दिन विशेष रूप से मनाई गई। इस उपलक्ष्य में मेजर विजय आर्य ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं पण्डित सत्यपाल पथिक के सुपुत्र श्री दिनेश आर्य पथिक को विशेष रूप से आमंत्रित किया था।

इस कार्यक्रम में सर्वश्री अशोक छावड़ा-राजपुरा, डॉ. अजय गुप्ता, आर्य समाज पंचकुला के प्रधान श्री डी.वी. बत्रा, प्रि. रमेश जीवन, डॉ. विक्रम कुमार विवेकी, आर्य समाज सैक्टर-22 के पूर्व प्रधान श्री सोमदत्त शास्त्री, श्री नरेन्द्र आर्य, आर्य समाज सैक्टर-22 के मंत्री श्री प्रेमचन्द आर्य, श्री मधु कोड़ा, श्री विशेष



आर्य, श्री अशोक आर्य, श्रीमती वेद चुग आदि उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री दिनेश आर्य के भजनों का कार्यक्रम चला। उन्होंने उपस्थित श्रोताओं को ईश्वरभक्ति के भजनों से विशेष रूप से आनन्दित किया, उसके पश्चात् सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

स्वामी जी ने आर्य समाज के इतिहास एवं आर्य समाज की मान्यताओं एवं मौलिक सिद्धान्तों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि लोगों ने आर्य समाज को और आर्य समाज के सिद्धान्तों को ठीक से समझा नहीं जिसके कारण बहुत सारे लोग आर्य समाज से सीधे जुड़ नहीं पाये। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि आर्य समाज की स्थापना मानव मात्र का उपकार करने के लिए की गई थी तथा बिना किसी भेदभाव एवं संकीर्णता के महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना निश्चित किया था। अतः यह बात भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि आर्य समाज संसार के समस्त प्राणियों के उपकार की भावना से कार्य करता है। आर्य समाज वेद को मानता है और वेद परमात्मा का ज्ञान होने के कारण पूरी दुनिया के लोगों के लिए समान रूप से उपयोगी है। वेद में वर्तमान प्रचलित सम्प्रदाय या मजहबों की चर्चा नहीं है। वेद मनुर्भव का संदेश देते हैं। अतः यह बात स्पष्ट है कि वैदिक सिद्धान्तों का पालन करने से ही सभी लोग सुखी हो सकते हैं। स्वामी जी ने यह भी स्पष्ट किया कि आर्य समाज सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझता है और लोगों की दैनिक समस्याओं के समाधान के लिए समय-समय पर सहयोग करता रहता है। वर्तमान में आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सप्तक्रांति के मुद्दों पर सघन कार्य कर रही है। यह सप्तक्रांति के मुद्दे हैं जातिवाद से मुक्त समाज की स्थापना, साम्प्रदायिकता मुक्त समाज की स्थापना, नशामुक्त समाज की



स्थापना, भ्रष्टाचार मुक्त समाज की स्थापना, धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड मुक्त समाज की स्थापना, महिला उत्पीड़न मुक्त समाज की स्थापना तथा शोषणमुक्त समाज की स्थापना। स्वामी जी ने कहा कि यदि ये सात सामाजिक बुराईयों समाप्त हो जायें तो एक श्रेष्ठ समाज का निर्माण होगा और ऐसा श्रेष्ठ समाज ही आर्य समाज कहलायेगा। स्वामी जी ने शराब आदि नशे, अण्डे, मांस आदि अभक्ष्य पदार्थ एवं सांस्कृतिक प्रदूषण के विरुद्ध लोगों को संकल्प दिलवाये और आर्य समाज से जुड़ने का आह्वान किया। स्वामी आर्यवेश जी ने आयोजकों को सार्वजनिक स्थान पर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए साधुवाद दिया। उन्होंने मेजर विजय और उनकी धर्मपत्नी शशि वर्मा को उनके विवाह की 40वीं सालगिरह पर शुभकामनाएं तथा आशीर्वाद देते हुए कहा कि ईश्वर इन्हें उत्तम स्वास्थ्य तथा दीर्घायु प्रदान करें। स्वामी जी के व्याख्यान को विशेष रूप से पसन्द करते हुए आयोजकों ने उनके बार-बार चण्डीगढ़ तथा पंचकुला में आते रहने का आग्रह किया।

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।